International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2021, Submitted in April 2021, iajesm2014@gmail.com

# हिंदू समाज में अग्नि भेंट का महत्व

जोगिन्दर सिंह, शोधकर्ता, संस्कृत विभाग, सनराइज विशविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
डॉ मिनेश जैन, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, सनराइज विशविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

## सारांश

*यह शोध पत्र हिंदू समाज में अग्नि भेंट, या होमा/यज्ञ के महत्व की जांच करता है। अग्नि को पवित्र माना जाता है और हिंदू धर्म में शुद्धता और परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है। अनुष्ठान में मंत्रों का उच्चारण करते हुए और विशिष्ट क्रियाएं करते हुए विभिन्न पदार्थों को अग्नि में अर्पित करना शामिल है। ऐसा माना जाता है कि हवन करने से वातावरण शुद्ध होता है, सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है और जीवन से नकारात्मकता और बाधाएं दूर होती हैं। यह आभार व्यक्त करने और परमात्मा से आशीर्वाद लेने का भी एक साधन है। स्वास्थ्य, धन, सफलता और शांति जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए विभिन्न प्रकार के हवन किए जाते हैं। यह पेपर उन विभिन्न अवसरों की पड़ताल करता है जिन पर हवन चढ़ाया जाता है, उनका सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व, और व्यक्तियों को परमात्मा से जोड़ने में उनकी भूमिका।*

**विशेष शब्द : शोध पत्र, हिंदू धर्म , सकारात्मक ऊर्जा , सांस्कृतिक और आध्यात्मिक**

## परिचय

वेद प्रक्रिया की बेहतरी के लिए जीवन के तीन क्षेत्रों को प्रदर्शित करते हैं और उनमें कर्म: (क्रिया), ध्यान: (ध्यान) और ज्ञान: (ज्ञान) शामिल हैं। जब तक वैयक्तिकता मनुष्य के रूप में बनी रहती है, तब तक क्रियाओं का पालन होगा और यह अंततः ज्ञान की ओर ले जाएगी। धतुपथः के अनुसार यज्ञ शब्द संस्कृत भाषा में यज्ञ से निकला है जिसका व्यापक अर्थ है, [ए] भगवान (प्राकृतिक शक्तियों) की पूजा, [बी] सृजन के विभिन्न डोमेन और [सी] दान के बीच सिंक्रनाइज़ेशन। ईश्वर की अवधारणा धर्म से धर्म में भिन्न होती है।

प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथ प्राकृतिक शक्तियों को भगवान या देवता के रूप में मानते हैं (देव जो प्रबुद्ध करते हैं [div = प्रकाश])। आमतौर पर सभी प्राचीन सभ्यताओं में ईश्वर के रूप में प्राकृतिक शक्तियों की पूजा प्रचलित थी। इसलिए किसी भी रूप में प्रकट (सूर्य, अग्नि आदि) और या अव्यक्त (प्राणः, मानसः आदि) ऊर्जा के रूप को हिंदू परंपरा में भी भगवान माना जाता है। पूजा ऊर्जा रूपों के स्रोतों की आवश्यकता के विचार की कल्पना करती है जहां से सभी जीवन रूपों के उपयोग के लिए ऊर्जा खींची जाती है। देवताओं की पूजा (उपासना) प्रकट रूपों की पूजा, साष्टांग प्रणाम, सामग्री संग्रह या पूजा, आह्वान, अध्ययन और प्रवचन और ध्यान के लिए भक्तों के रूप में हो सकती है। यज्ञ भी सृजन के विभिन्न क्षेत्रों और उनके संबंधित देवताओं के बीच शाश्वत संदेशवाहक अग्निः (अग्नि) (संगतिकरणम्) के माध्यम से जुड़ने का एक अनुष्ठानिक तरीका है; सोचने और कार्य करने की स्वतंत्रता की डिग्री व्यक्ति के साथ विशेष रूप से मनुष्यों के साथ टिकी हुई है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई यज्ञ के माध्यम से आध्यात्मिक रूप से इन क्षेत्रों से कैसे जुड़ता है। वह लोक माना जाता है जहां कर्मफल (गुण या पाप कर्म का परिणाम) का भौतिकीकरण किया जा रहा है। एक पुण्यः के कारण स्वर्गलोक (स्वर्गः) का आनंद लेता है, पापा के कारण नरकलोके दुःखं प्राप्नोति होता है, और अगले चक्र के लिए कर्मफल का ढेर लगाने के लिए मानव के रूप में जन्म लेता है। इस प्रकार, जन्म और मृत्यु का एक नया चक्र बिना अंत के हमेशा के लिए जारी रहता है जब तक कि किसी को दुः खद पुनरावृत्ति के झूठे अनंत काल के बारे में पता नहीं चलता। इस संबंध में कर्मकांडीय बलिदान एक प्रमुख भूमिका निभाता है जिसके द्वारा इस दुनिया में प्राणी पोषित इच्छाओं की पूर्ति के लिए देवताओं को प्रसन्न करते हैं। कालिदासस्य रघुवंशः, विशेष रूप से इस बात का संदर्भ देता है कि कैसे एक महान राजा, राजा दिलीपः के रूप में विभिन्न लोकों को बनाए रखा गया था, जिन्होंने "देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पृथ्वी के खजाने का उपयोग करके महान बलिदान किए और उन्होंने बारिश के रूप में स्वर्गीय खजाने को बहा दिया।" इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों के प्राणियों के बीच पारस्परिक आदान-प्रदान से, यज्ञ द्वारा इन संसारों का निर्वाह सुनिश्चित किया गया। [भगवद गीता 3.11 -12] भी

जीविका के लिए आपसी आदान-प्रदान में समान दृष्टिकोण का समर्थन करता है। "देवताओं को यज्ञ से संजोएं और देवाः आपको संजोएं, इस प्रकार एक दूसरे को पोषित करने से आप इच्छित धन प्राप्त करेंगे और लौकिक सद्भाव को बनाए रखेंगे, तथ्यात्मक रूप से प्राकृतिक शक्तियां यज्ञ की इस प्रणाली से शुद्ध और सक्रिय होती हैं।"

उपयुक्त दान (दानम्) : हर जीव पिछले जन्म में किए गए कर्मों के परिणामों का अनुभव करने के लिए कुछ समय के लिए विशाल ब्रह्मांड के सीमित संसाधनों का संरक्षक है। पुण्य-पाप की मात्रा के आधार पर दीर्घायु और जीवन की गुणवत्ता के आधार पर कुछ समय यहाँ पृथ्वी पर बिताने का निर्णय लिया जाएगा। समय की इस अवधि में व्यक्ति को परिवार, समाज और अन्य जीवित प्राणियों की देखभाल डिफ़ॉल्ट रूप से करनी पड़ती है क्योंकि उसे बनाए रखने के लिए समर्थन मिलता है। एक अनिवार्य कार्रवाई के रूप में साझा करने और देखभाल करने से दूसरों का ख्याल रखना चाहिए। यह भी यज्ञ है।

## यज्ञीय अग्नि:

अग्नि को प्राथमिक दिव्य तत्व माना जाता है जो ब्रह्मांड के निर्माण, निर्वाह और विनाश में सहायक है। अग्नि को देवताओं का दूत माना जाता था और उन्हें सभी बलिदानों में विशेष प्रसाद देने के लिए बुलाया जाता था। यज्ञों से अनेक रीति-रिवाज जुड़े हुए थे जैसे प्रज्वलन (जनन-जन्म), रक्षा और अग्नि को बुझाना। वैदिक काल के बाद से कई बलिदान जैसे पके हुए सामान (पाकायज्ञाः) को शामिल करने वाले, सोम के उपयोग से जुड़े (सोमयज्ञाः के रूप में जानी जाने वाली एक चुनी हुई लता का निष्कर्षण) और वे जो सामूहिक रूप से श्रौत-यज्ञः (यज्ञ) के रूप में जाने जाते हैं (हविर-यज्ञ) सीधे वेदों से उत्पन्न) किया गया है। ये धीरे-धीरे समय के साथ घटते गए और स्मार्टयज्ञों (स्मृतिः में निर्धारित यज्ञ) को जन्म दिया, जो किसी व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक कई समारोहों के दौरान किए जाते हैं।

अग्नि को बलिदानों में आमंत्रित एक जीवित व्यक्ति माना जाता था और यह सोलह संस्कार (संस्काराः) जैसे गर्भाधान (गर्भधानम्), जन्म (जातकर्म), पहले भोजन (अन्नप्राशन) और इसी तरह करने की प्रथा थी। इन अधिकारों को वेदों, श्रौत सूत्राणि, आगमम् ग्रंथों और विशेष रूप से बलिदानों से संबंधित वैदिक ग्रंथों के बाद के कई प्राचीन ग्रंथों में विस्तृत रूप से निपटाया गया है। इन हिंदू शास्त्रों के अलावा 5 महान यज्ञों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है जिन्हें हर व्यक्ति द्वारा किया जाना है। गृहस्थ। तैत्तिरीय आरण्यक में इनका उल्लेख है

**(i) देव यज्ञः (भगवान को प्रसाद) :** अलग-अलग तरीकों से भगवान की पूजा जो किसी के स्तर के लिए उपयुक्त हो ।

**(ii) पितृ यज्ञ (पितृभ्यः अर्पणम्) :** माता-पिता के साथ श्रद्धा का बंधन, पूर्वजों का सम्मान और पूजा करना परिवार की परंपरा आदि का पालन करके अपने अस्तित्व का कारण थे। किसी का कल्याण परिवार में कई सदस्यों के कल्याण पर निर्भर करता है। अतः इस प्रकार के यज्ञ में पूर्व में परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता है।

(iii) **भूतयज्ञ (पशुपक्षिप्रभृतिभ्यः नैवेद्यं) :** प्रकृति, जानवरों, पक्षियों और दुनिया के किसी भी प्राणी के प्रति दया। जीवों की देखभाल करना भूत यज्ञ: है। प्राय: सभी देवताओं के पास पशुओं के रूप में वाहन हैं। विशेष देवता की पूजा करते समय, उनके वाहनों की भी पूजा की जाती है। इस तरह सभी जानवरों की देखभाल करते हुए जानवरों का सम्मान करना भूत यज्ञ है।

(iv) **मनुष्य यज्ञ (मानवता को अर्पण) :** यह संपूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में शामिल करने के लिए भावनाओं का विस्तार है। "मेरा और तेरा ध्यान केवल उन अल्पबुद्धियों से तौलो; बड़े दिल वालों के लिए, दूसरी ओर, पूरी दुनिया एक घर की तरह है" - संकीर्ण दिमाग का दृष्टिकोण है, लेकिन उदार दिल वालों के लिए, पूरी पृथ्वी एक परिवार है। जरूरत में मदद के लिए हाथ बढ़ाना वास्तविक मनुष्य यज्ञ है।

(v) **ब्रह्म यज्ञ:** (ज्ञान के रूप में प्रसाद): पारंपरिक रूप से उन्मुख वास्तविक गुरु के अधीन अध्ययन करके शास्त्रों के प्रति श्रद्धा दिखाना। विभिन्न हिंदू परंपराएं भगवद गीता में वर्णित कई अन्य यज्ञों की भी बात करती हैं:

(i) **द्रव्य यज्ञ:** किसी के कल्याण के लिए विशेष देवी-देवताओं से संबंधित निर्दिष्ट मंत्रों का जाप करते हुए चयनित और पवित्र पौधों को अग्नि में अर्पित करना। इसमें दूसरों के साथ अपना सामान बांटना और जरूरतमंदों और पात्र लोगों को दान देना शामिल है।

(ii) **तपो यज्ञ:** भौतिक सुखों का त्याग, एक स्थान पर अधिक समय तक बैठना, श्वास पर नियंत्रण, इन्द्रिय सुखों को कम करना, शास्त्रों का अध्ययन आदि अनेक प्रकार की साधनाओं की प्रक्रिया द्वारा स्वयं को शुद्ध और स्वामी बनाने के लिए कठोर आचरण का पालन करना। गहरे स्तर, सीमित और न्यूनतम संसाधनों के साथ संतोष इत्यादि। यह हल्के से बहुत गंभीर स्तरों में भी भिन्न हो सकता है। इच्छित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए तीव्रता के आधार पर लोग उसी का अनुसरण करते हैं। तप का तीन स्तरों में पालन किया जाता है - भावनात्मक, वाचिक और शारीरिक। शांत रहना, खुश रहना, वाणी पर स्वैच्छिक नियंत्रण, शुद्ध भावनाएँ - भावनात्मक स्तर पर तप; अउत्तेजक शब्द, सत्य बोलना, शास्त्रों का अध्ययन - मुखर स्तर पर तपस; अंत में - बड़ों का सम्मान, स्वच्छता और अहिंसा - शारीरिक स्तर पर तप।

(iii) **योग यज्ञ:** पतंजलि और अन्य गुरुओं द्वारा निर्धारित योग के मार्ग में शक्ति अभ्यास के माध्यम से मानस (मन) को नियंत्रित करने के तरीकों का निरंतर अभ्यास। मन का स्वभाव है भटकना, नानाविध क्रियाओं द्वारा मन पर नियंत्रण रखना। पतंजलि योग शास्त्र में कहा गया है कि अभ्यास के माध्यम से मन पर पूर्ण विजय और इच्छाओं पर विजय योग है।

(iv) **स्वाध्याय यज्ञ:** शास्त्रों का अध्ययन जो वास्तव में किसी को मोक्ष (मोक्ष:) तक पहुँचा सकता है या लंबी अवधि के लिए चयनित और आरंभ किए गए मंत्र की पुनरावृत्ति, जब तक कि कोई उसी पर पूरी तरह से महारत हासिल नहीं कर लेता, विशेष रूप से ओम-कारा। ओएम आधारित ध्यान (ध्यान) संख्या में कई हैं, जो भारत के लगभग सभी प्रमुख साहित्य में वर्णित हैं। इस संदर्भ में आत्म-विश्लेषण को स्वाध्याय भी माना जाता है जो वास्तव में यह बताता है कि जीवन में आंतरिक विकास की दर क्या है।

(v) **ज्ञान यज्ञ:** कठोर तपस्या के माध्यम से सच्चे ज्ञान की तलाश करना। इस मार्ग पर किसी के जीवन का एकमात्र लक्ष्य हर तरह से आत्म-साक्षात्कार है। यज्ञों का वर्गीकरण और विवरण जैसा कि ऊपर बताया गया है, किसी भी यज्ञ को करने के उद्देश्य पर विशेष रूप से प्रकाश डालता है। आधुनिक संदर्भ में समाज के कुछ वर्ग हैं जो प्राचीन भारतीय परंपराओं के चार्वाक (**नास्तिक**) दार्शनिकों के समान ही यज्ञों के प्रदर्शन का विरोध करते हैं। चारवाकों ने यज्ञ में एक पशु (पशु) की बलि द्वारा प्राप्त स्वर्ग की प्राप्ति को स्पष्ट रूप से इस दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए अस्वीकार कर दिया कि उस स्थिति में व्यक्ति अपने पिता को अर्पित कर सकता है ताकि वह स्वर्ग प्राप्त कर सके।

**यज्ञ अनुष्ठानों का प्रदर्शन**

वैदिक काल से ही बलि की टहनियों (जिन्हें अरणी कहा जाता है) को आपस में रगड़ कर आग प्रज्वलित की जाती थी। अग्नि मंथन में दोनों हथेलियों और दस अंगुलियों का उपयोग होता है जिन्हें अग्नि की बहनें माना जाता है। इस रगड़ से अग्नि के गर्भाधान (गर्भाधान) की प्रतीकात्मक क्रिया होती है। ऋग्वेद 1RV (5.2.1-2) कहता है कि अग्नि को जन्म देने वाली अरणि युवती और महिषी कहलाती है। यह मां अपने बच्चे को सीने से लगा लेती है, पिता को नहीं देती। कभी-कभी पाठ कहता है कि अग्नि की दो माताएँ हैं जैसे निचली अरणि और ऊपरी खड़ी छड़ी [ऋ.व. 1.141.3]। आर.वी. [3.29.1-3] घर्षण द्वारा आग के इस प्रज्वलन की तुलना संतानोत्पत्ति7 से करता है। यहां तक कि प्राचीन ऋषियों ने जन्म से लेकर मृत्यु तक (मनुष्यों के लिए) यज्ञ-अग्नि से जुड़े सभी अनुष्ठानों को निर्धारित किया था। इनमें गर्भधान (गर्भाधान), पुंसवन (एक पुरुष बच्चे को जन्म देने का संस्कार), सीमंतोन्नयन, (अनुष्ठान के रूप में बालों को अलग करने का संस्कार), जातकर्म (जन्म), नामकरण

(नामकरण), अन्नप्राशन (पहले भोजन), कौला ( पहली कटाई), उपनयन (धागे की रस्म), व्रत (गुरु को प्रतीकात्मक रूप से दी गई गायों के उपहार के साथ), समावर्तन (पढ़ाई के बाद घर लौटना), विवाह (विवाह) अग्नि के लिए संबंधित मंत्रों के साथ। बलि अनुष्ठानों के प्रदर्शन में कई बाधाओं को दूर करने के लिए उनकी कृपा पाने के लिए कई देवताओं की पूजा भी शामिल है, सीढ़ी का प्रतीकात्मक मिलन - श्रुक (शक्ति का अवतार होना) और श्रुव (पुरुष का अवतार), बुराई को दूर करने के लिए प्रायश्चित समारोह यज्ञ के प्रदर्शन का क्रम। 7 "यज्ञ उच्च दिव्य प्राणियों के लिए एक भेंट है" जहां से मनुष्य और पृथ्वी पर अन्य जीवित प्राणी अपने अस्तित्व के लिए ऊर्जा खींच रहे हैं। "मुझे जो मिलता है उससे अधिक भेंट दें" (नरसिम्हन, और अन्य 2011)। भगवद गीता में कृष्ण ने मनुष्य और भगवान दोनों के पोषण के तंत्र के बारे में एक स्पष्ट विचार दिया। "सभी प्राणी अन्न से उत्पन्न हुए हैं, अन्न की उत्पत्ति वर्षा पर आश्रित है, वर्षा की उत्पत्ति यज्ञ से हुई है और यज्ञ की जड़ निर्धारित कर्म (कर्म) में निहित है। कर्म का मूल वेदों में है और वेद अविनाशी (भगवान) से आगे बढ़ते हैं, इसलिए सर्वव्यापक अनंत यज्ञ में हमेशा मौजूद हैं "। [भगवद गीता 3.14-15]। महाभारत [अनुशासनिका पर्व विष्णुसहस्रनाम] में भी इसका समर्थन किया गया है। 971 - 980]। सृष्टि में रहने का सामंजस्यपूर्ण तरीका ही अंततः यज्ञ बन जाता है। यदि देवताओं द्वारा दिया गया वरदान वापस नहीं लौटाया जाता है, तो उसे चोर माना जाता है, कुछ भी नहीं लौटाता है। यज्ञ इस रचना में उनके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं के लिए उनकी सराहना और कृतज्ञता की गहरी भावना को व्यक्त करने का एक तरीका है। भगवान को मुंहतोड़ जवाब देने का यही एकमात्र तरीका है। जो धर्मी बलिदान में से बचा हुआ खाता है, वह सब पापों से छूट जाता है; परन्तु जो पापी केवल अपने लिये ही भोजन पकाते हैं, वे पाप ही खाते हैं। [भगवद गीता - 3.16]।

**यज्ञ करते समय व्यक्ति का भाव**

"वह करछुल जिससे हव्य चढ़ाया जाता है, जिस अग्नि में आहुति दी जाती है और आहुति देने का कार्य ब्रह्मा है। भगवान द्वारा ईश्वर (भगवान) नामक अग्नि में डाला गया बलिदान, बलिदान के रूप में माना जाता है। जो ऐसा यज्ञ करता है, वह उसमें विलीन हो जाता है और उसे प्राप्त कर लेता है। [भगवद गीता 4. 25-28] एक अभ्यासी (साधक) को आध्यात्मिक रूप से स्वयं को महसूस करने में मदद करना। जो मनुष्य अर्पण नहीं करता, उसके लिए न यह लोक सुखी होता है और न परलोक सुखी [भगवद गीता - 4.31]। वास्तविकता को समझने के लिए प्रत्येक साधक को सुविधा प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के यज्ञों को शामिल किया गया है। यज्ञ [भगवद गीता - 3.9] के लिए किए जाने को छोड़कर मनुष्य अपने कर्म से बंधा हुआ है। अर्पण का एक महत्वपूर्ण गुण यह है कि करने से बंधन बंधन से मुक्त हो सकता है। यह एक आदर्श क्रिया है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति बंधनों से मुक्त हो जाता है। यज्ञ के प्रदर्शन के पीछे सामाजिक कल्याण और प्रकृति की भलाई के लिए विचार है। यज्ञ की प्रक्रिया संकल्प (संकल्प) से प्रारंभ होती है। व्यक्ति अपनी इच्छाओं के आधार पर कुछ लक्ष्य प्राप्त करने का इरादा रखता है और यज्ञ लक्ष्य प्राप्त करने के साधन के रूप में कार्य करता है।

**यज्ञ में आहुति**

वैदिक काल से ऋषि यज्ञों के प्रदर्शन में विभिन्न वस्तुओं (सांभरा) की पेशकश की व्यवस्था करते हैं। इनमें से कुछ में गाय का शुद्ध घी, विभिन्न प्रकार की बलि की टहनियाँ (समित्स), अनाज, भुना हुआ चावल, चावल के व्यंजन (चारू, पायसा और इसी तरह), शहद, दरभा घास, हर्बल पौधे (सोम और कई आयुर्वेदिक सूत्रीकरण) शामिल हैं। ये प्रसाद विशिष्ट उद्देश्यों के लिए वर्ष के कुछ शुभ समय पर किए गए थे।8। प्राचीन शास्त्रों के नुस्खे के अनुसार इसके पूर्ण परिणामों के लिए शुभ समय और उपयुक्त स्थानों पर एकत्र की गई सामग्री अच्छी गुणवत्ता की मानी जाती थी। इस तरह के नुस्खे कई श्रौत पाठ और चार वेदों के परिशिष्टों में पाए जाते हैं, और वैदिक ग्रंथों और बलिदानों से संबंधित नियमावली के बाद भी। इन

प्रदर्शनों को मोटे तौर पर चार श्रेणियों जैसे नित्य, नैमित्तिक, काम्य और प्रायश्चित में विभाजित किया गया था। नित्य प्रदर्शन दिन में दो बार सुबह और शाम (संध्यावंदनम और अग्निहोत्रम) में किया जाता है जिसमें सूर्य को नमस्कार और न्यूनतम सामग्री के साथ अग्नि भेंट शामिल है; नैमित्तिक में मौसमी परिवर्तनों के अनुसार सभी त्यौहार और सामयिक प्रदर्शन (दर्शपूर्णा, प्रदोष, व्रत आदि) शामिल हैं; काम्य कर्म इच्छाओं को पूरा करने के लिए किए जाने वाले प्रदर्शन हैं जैसे (पुत्रकामेष्ठी - संतान पैदा करने के लिए किया गया यज्ञ; पशुयग - पशुओं को बढ़ाने के लिए यज्ञ; राजसूय - एक राजा का अभिषेक और इसी तरह); प्रायश्चित कर्म अनपेक्षित गलतियों के लिए नकारात्मक प्रभावों को शांत करने के अलावा और कुछ नहीं हैं। 9 इनके अलावा यज्ञ का मुख्य उद्देश्य अहंकार को त्यागना है और जो कुछ भी भगवान ने दिया है उसे बिना किसी रिटर्न की उम्मीद के दूसरों को अर्पित करना है। हालांकि कई ग्रंथों में जानवरों के वध से जुड़े बलिदानों का उल्लेख है, लेकिन प्रथाओं की गलत व्याख्या है। ग्रंथ वास्तव में जो बताते हैं वह व्यक्ति के भीतर के बुरे गुणों का त्याग है जो व्यवहार में जानवरों जैसा दिखता है (पशुत्व)। यज्ञ के दौरान किए गए प्रत्येक कार्य के पूर्व ज्ञान के बिना बलि द्वारा अंधाधुंध रूप से किए गए प्रसाद की दृष्टि से यह महत्व रखता है। आधुनिक सन्दर्भों में केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अनेक यज्ञों के अनुष्ठानों को आँख बंद करके देखना स्वाभाविक है। ऐसे व्यक्ति नास्तिक (चार्वाक) से कम भिन्न नहीं होते हैं जो मानते हैं कि जब एक बलि देने वाले जानवर को स्वर्ग की प्राप्ति होती है तो वह अपने पिता की बलि क्यों नहीं देता ताकि वह भी उसी आनंद को प्राप्त कर सके! हालाँकि वैदिक और उत्तर वैदिक ग्रंथों में भी कुछ इच्छाओं को पूरा करने के लिए विशेष प्रसाद का वर्णन किया गया है जो शुभ और अशुभ अवधि के दौरान किए गए थे। शुभ प्रसाद में राजसूय, अश्वमेध, दर्शपूर्णमास आदि के दौरान किए गए प्रसाद शामिल हैं। अशुभ प्रसाद में सूखे की स्थिति, पूर्वाभास, प्राकृतिक-विपदा आदि के दौरान उन प्राकृतिक शक्तियों को नियंत्रित करने वाले देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किए गए प्रसाद शामिल हैं। एक उदाहरण के रूप में तैत्तिरीय संहिता में निर्धारित करिश्ती होम पर विचार किया जा सकता है जिसमें करीरा [कप्परिस एफिला] फलों को बलि की आग में चढ़ाया जाता है जिसके परिणामस्वरूप शुभ धुआं होता है जो वातावरण में व्याप्त होता है और बारिश को प्रेरित करता है ताकि सूखे की अशुभता को दूर किया जा सके।

**यज्ञ और प्रभावों का प्रायोगिक अवलोकन**

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि यज्ञकर्ता द्वारा विभिन्न अवसरों पर चढ़ाए गए चढ़ावे ने दैवीय हस्तक्षेप की कृपा से उचित समय पर विशिष्ट परिणाम दिए। भारत और विदेशों में अनुसंधान अध्ययन कई यज्ञों की प्रभावकारिता को इंगित करते हैं जो व्यक्तियों के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण में बेहतर सुधार, अच्छे कृषि उत्पादन, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन आदि के साथ समाज को लाभान्वित करते हैं। एक उदाहरण के रूप में माना जाता है कि अग्निहोत्र अग्नि अनुष्ठान प्रकृति का संतुलन, समग्र विकास और मानव जीवन की वृद्धि लाता है। अग्निहोत्र में मूल रूप से गाय के गोबर के उपले, गाय का घी, बलि की टहनियाँ जैसे वात (फ़िकस बेंगालेंसिस), ऑडुम्बरा (फ़िकस ग्लोमेट्रा), पलाश (बुटिया फ्रोंडोसा), बेल (एगल मार्मेलोस) और इसी तरह के प्रसाद शामिल हैं। इनमें से 12 प्रायोगिक रूप से पाए गए कि घी का प्रसाद एसिटिलीन पैदा करता है और हवा में प्रदूषकों को चूसता है जिससे यह शुद्ध होता है। गाय के गोबर में मेन्थॉल, अमोनिया, फिनोल, फॉर्मेलिन आदि प्रचुर मात्रा में होते हैं, इस प्रकार यह वातावरण में रोगजनकों को मिटाने के लिए कीटाणुनाशक के रूप में कार्य करता है। बलि की टहनियों के प्रसाद के औषधीय और लाभकारी प्रभाव होते हैं जैसे वातावरण में अत्यधिक गर्मी को कम करना। बलिदानियों के ईईजी परीक्षणों में बढ़ी हुई अल्फा तरंगों को दिखाया गया है जो मस्तिष्क के पूर्ण विश्राम में होने का संकेत देता है। आहुति की पेशकश के दौरान मंत्रों का जाप उन्हें ऊर्जा से भी आकर्षित करता है जो यज्ञकर्ता को उन आध्यात्मिक देवताओं से जोड़ता है जिनके लिए प्रसाद चढ़ाया जाता है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए विभिन्न प्रयोगों के आधार पर पौधों की वृद्धि,

बीज अंकुरण, त्वचा रोगों के उपचार, जल शोधन पर अग्निहोत्र प्रदर्शन के समान प्रभावों की जांच की गई है। वर्तमान ग्लोबल वार्मिंग परिदृश्य में बारिश लाने के साथ-साथ नमी सामग्री (सोमांश) को प्रेरित करने के लिए अतिरात्र यज्ञ, सोमयाज्ञ, करिष्ठी होमा और अन्य के इसी तरह के प्रायोगिक अवलोकन कई स्थानों से रिपोर्ट किए गए हैं, जहां यज्ञ किए गए थे। सोमयाग एक बलि अनुष्ठान है जिसमें देवताओं को सोम रस अर्पित किया जाता है जिससे ब्रह्मांड में पांच तत्वों (पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल और ईथर) को ऊर्जा प्रदान की जाती है ताकि समृद्धि प्रदान की जा सके और प्राकृतिक संतुलन बहाल किया जा सके। ये यज्ञ मानसूनी वर्षा में वृद्धि दर्शाते हैं जो कृषि समृद्धि लाने के लिए समय पर और पर्याप्त थी। सोमयागों के प्रदर्शन से छह ऋतुओं का प्राकृतिक चक्र त्वरित और विनियमित होता है। औसतन लगभग 70% वर्षा की सटीकता उन स्थानों पर दर्ज की गई है जहाँ सोमयाग किए गए थे।

**निष्कर्ष**

यज्ञ और योग जैसी भारतीय पारंपरिक प्रथाओं की वर्तमान परिदृश्य में भी प्रासंगिकता है। सभी प्रदर्शनों में अग्नि संस्कार प्रकृति के अनुसार मानव विचारों और जीवन प्रक्रिया को परिष्कृत करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। जीवन जीने की पर्यावरण के अनुकूल पद्धति उपयुक्त पद्धति से मानवता के उत्थान के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों का जवाब दे सकती है। यह केवल व्यक्ति द्वारा की जाने वाली प्रत्येक क्रिया की स्पष्ट समझ से ही हो सकता है। हालाँकि, अग्नि समारोह मानव को प्रकृति को समझने में मदद करता है और प्रकृति के अनुरूप खुद को व्यवस्थित करता है। किए गए प्रसाद पर उपरोक्त चर्चा से, किसी को इस तरह के प्रसाद के ज्ञान से लैस करने की आवश्यकता है ताकि अग्नि भेंट समारोह भावी पीढ़ियों के लिए एक पारंपरिक, सामंजस्यपूर्ण, समृद्ध समाज लाने के सकारात्मक प्रभावों को बढ़ा सके।

**संदर्भ :**

1. सायणाचार्य, "माधवीय धतुवृत्ति", प्राच्य भारती प्रकाशन, वाराणसी, 1964, पृ.295-297।
2. शेषाद्रि, केजी, "प्राचीन भारतीय ग्रंथों में प्रकट अग्नि के लिए सोलह संस्कार", जर्नल ऑफ इंडियन इंटेलेक्चुअल ट्रेडिशन, पुणे, वॉल्यूम। एक्स, नंबर 1, जून 2013, पी.55 - 63।
3. शास्त्री, ए.एम., रंगाचार्य, के., (संपा), "कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय आरण्यक विथ भाष्य ऑफ़ भट्टभास्कर मिश्रा", खंड। I-III, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक, नई दिल्ली, 1985, पृष्ठ 216।
4. हिरियन्ना, एम., "आउटलाइन्स ऑफ इंडियन फिलॉसफी", मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, 1993, पृष्ठ.366।
5. स्वामी चिन्मयानंद, "भगवद गीता अध्याय - IV, चिन्मय मिशन प्रकाशन, 2006, पृष्ठ 60 - 62।
6. काउल, ई.बी., गॉफ, ए.ई., "सर्वदर्शन संग्रह", ट्रूबनर एंड कंपनी, लंदन, 1882, पृष्ठ 10-11।
7. शास्त्री, के.एस. सुब्रह्मण्य।, "गिरवानेंद्र सरस्वती का प्रपंच सारा संग्रह", तंजावुर, सरस्वती महल पुस्तकालय श्रृंखला संख्या 98, 2002, पृष्ठ 77 - 83।
8. बोलिंग, जॉर्ज मेलविले।, नेगेलीन, जूलियस वॉन।, "अथर्ववेद के परिशिष्ठ", चौखंभ संस्कृत श्रृंखला, वाराणसी, 2008, पृष्ठ 92 - 93।
9. वीझिनाथन, एन., "द एथिक्स ऑफ द न्याय-वैशेषिका स्कूल", अध्याय 12., प्रसाद, राजेंद्र।, ए हिस्टोरिकल डेवलपमेंटल स्टडी ऑफ क्लासिकल इंडियन फिलॉसफी ऑफ मोरल्स, वॉल्यूम। बारहवीं भाग - श्रृंखला का 2, भारतीय सभ्यता में विज्ञान, दर्शन और संस्कृति का इतिहास, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली, 2009, पृष्ठ 248।

10. कॉवेल, ई.बी., गॉफ, ए.ई., "सर्वदर्शन संग्रह बाय माधव आचार्य", ट्रूबनर एंड कंपनी, लंदन, 1882, पृष्ठ 10-11। 272
11. रामनाथन, ए.एस., "प्राचीन में वेद और मौसम विज्ञान इंडिया", नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 1995, पृ. 60 - 63।
12. राजन, एस.एस., "डिक्शनरी ऑफ संस्कृत प्लांट नेम्स", वर्धन प्रकाशन, बैंगलोर, 2005, पृष्ठ 281।
13. वेंकटेशन, आर।, "अग्नि - हीलर - प्रकृति के संतुलन और मानव जीवन की वृद्धि के लिए अग्निहोत्र", भारतीय विरासत अकादमी, बैंगलोर, दिसंबर - 2006, पी में भास्करियम, भरतियम और धन्वंतरियाम पर त्रिकोणीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की कार्यवाही .168 - 171।
14. पाथेडे, जी.एन., अभंग, प्रणय।, "वैदिक का वैज्ञानिक अध्ययन ज्ञान - अग्निहोत्र", भारतीय बौद्धिक सम्पदा, विज्ञान भारती की त्रैमासिक विज्ञान पत्रिका, इस्सूर संख्या 43-44, फरवरी - जून 2014, पृष्ठ 18 - 27।
15. नंबूदरी, कथाप्रम वासुदेवन, "साग्निकम अतिरात्रम", अथश्री प्रकाशन, कोच्चि, केरल, 2013, प्रस्तावना, पृष्ठ 7 - 14।
16. वैद्य, वीबी, काले, नानाजी।, "वैदिक रेन फोरकास्टिंग एंड रेन इंडक्शन साइंस एंड टेक्नोलॉजी की समीक्षा", भारतीय बौद्धिक संपदा, विज्ञान भारती की त्रैमासिक साइंस जर्नल, इस्सूर नंबर 43-44, फरवरी-जून 2014, पी। 28 - 43।